Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
ISSN: 3107-5088, Vol. 2, Issue-3 (July-Sep, 2026), pp. 196-199, www.cognitivethinking.in

डा0 रामकुमार वर्मा की हिन्दी सेवा

डा0 कर्मेन्द्र सिंह सेंगर
प्रवक्ता–हिन्दी, श्री मलखानसिंह महाविद्यालय ठूलई (हाथरस)
ईमेल : karmendrasinghaingar@gmail.com

D.O.I. https://doi.org/10.5281/zenodo.22082027
Article: Received: 20/07/2026, Returned: 30/07/2026, Accepted: 09/08/2026, Published: 14/08/2026.
@2026 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सारांश

राम कुमार वर्मा हिंदी साहित्य के बहुआयामी साहित्यकार, कवि, नाटककार, एकांकीकार एवं आलोचक के रूप में हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा के माध्यम से हिंदी भाषा एवं साहित्य को समृद्ध करने के साथ–साथ हिंदी की साहित्यिक प्रतिष्ठा को भी व्यापक बनाया। उनकी रचनाओं में भाषा के प्रति गहरा अनुराग, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था, राष्ट्रीय चेतना तथा मानवीय संवेदनाओं का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। विशेष रूप से हिंदी एकांकी और नाटक के क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विषयों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए हिंदी नाट्य–साहित्य को नई दिशा दी। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी भावाभिव्यक्ति, सौंदर्य और प्रभाव की दृष्टि से समृद्ध है। उन्होंने अध्यापन, लेखन, शोध एवं आलोचना के माध्यम से हिंदी के अकादमिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रस्तुत अध्ययन में राम कुमार वर्मा की हिंदी–सेवा के विविध आयामोंकृसाहित्य–सृजन, भाषा–प्रेम, नाट्य–विकास, आलोचना, अध्यापन तथा हिंदी के प्रचार–प्रसारकृका विश्लेषण किया गया है। उनका साहित्य हिंदी भाषा की समृद्ध परंपरा और आधुनिक चेतना के मध्य एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द

राम कुमार वर्मा, हिंदी सेवा, हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य, हिंदी–प्रेम, एकांकी, नाटक, काव्य, आलोचना, भाषा–संवर्धन, हिंदी प्रचार–प्रसार, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना, साहित्य–सृजन, हिंदी नाट्य–साहित्य, साहित्यिक योगदान।

प्रस्तावना

आधुनिक युग में जिन साहित्यकारों ने हिन्दी की निस्वार्थ सेवा कर उसे समृद्ध तथा उन्नत बनाया है, उनमें डॉ0 राजकुमार वर्मा का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। बाल्यावस्था में ही डॉ0 राजकुमार वर्मा को हिन्दी के संस्कार विरासत में अपने परिवार से प्राप्त हुए थे। डॉ0 राजकुमार वर्मा के परिवार में रामभक्ति की परम्परा दीघ्रकाल से चली आ रही है। उनके पितामह श्री शोभाराम जी रामभक्त थे। माता राजरानी वर्मा जी को यह संस्कार देने में सफलता रही। उन्होनें वर्मा जी को मीरा और कबीर के भजनों तथा रामचरित मानस की चौपाइयों को गा–गा कर सुनाया। अतः वर्मा के बालक मन पर प्रारम्भ से ही काव्य और संगीत के साथ–साथ साहित्य के अंकुर प्रस्फुरित होना स्वाभाविक था। इसके वर्मा जी की माता श्रीमती राजरानी देवी के कहने पर ही बेटे को हिन्दी पढ़नी शुरू की अन्यथा उस युग में अंग्रेजी और फारसी भाषा का वर्चस्व था। पिता श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा की इच्दा थी कि वर्मा जी अंग्रेजी की शिक्षा ग्रहण करें। परन्तु यहॉ भी वर्मा ने अपनी माता की इच्छा का अनुकरण किया। उन्होनें हिन्दी भाषा ग्रहण कर अपने जीवन की दिशा का चयन किया। वर्मा जी ने अपने हिन्दी और साहित्य सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। वर्मा जी ने हिन्दी सेवा का दृढ़ व्रत लिया और उनका यह सौभाग्य रहा कि इस पवित्र उद्देश्य

में उन्हें पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई। इन्दा दीवान के मतानुसार ''साहित्य के गुणों से मंडित होने पर भी जो सौजन्यता, साहित्य के प्रति पवित्र आस्था और मर्यादावादिता उनके साहित्य में दृिष्टगत होती है उनका बहुत कुछ श्रेय उनके घर के वातावरण को हैं। भगवती, सरस्वती के कारणों में उन्होनें शायद अपने अहं और स्वं का विसर्जन किया था। इसलिए वह एक महाकवि की अन्त दृष्टि और एक नाटककार की कुशल संश्लेषण कला का परिचय पत्र–प्रतिपल दे सकें।''

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने साहित्य सेवा के साथ–2 विभिन्न माध्यमों से हिन्दी की प्रचुर रूप से सेवा की है। उनकी हिन्दी सेवा के विविध रूप और माध्यम रहे हैं। डॉ0 रामकुमार वर्मा संस्था की स्थापना कर के हिन्दी का व्यापक प्रचार एवं प्रसार किया है। उन्होनें अपने विद्यार्थी जीवन में ही श्रीकान्त मालवीय और पदम कान्त मालवीय के साथ मिलकर प्रयाग में एक हिन्दी संस्था का निर्माण किया और इसका नाम रखा गया 'सुकवि समाज'। वर्मा जी के यह प्रथम प्रयास काफी रचनात्मक एवं प्रभावी रहा। काफी दिनों तक वे इस संस्था के मंत्री पद को सुशोभित करते रहे। 'सुकवि समाज' में प्रायः हिन्दी के कवियों की गोष्ठी होती थी। जिसमें श्रीमती सरोजिनी नायडू, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, भगवती चरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, आदि–आदि प्रमुख कविगण अपनी काव्य रचनाओं का पाठ करते। इसके अतिरिक्त अनेक साहित्यिक विषयों पर चर्चा और व्याख्यान आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न होते। प्राध्यापक बन जाने के पश्चात भी डॉ0 रामकुमार वर्मा ने अपनी निष्ठा और सेवा में किंचित मात्र को शिथिल नहीं होने दिया। उन्होनें प्राध्यापकीय जीवन में एक नवीन संस्था 'भारतीय हिन्दी परिषद' की स्थापना कर हिन्दी के प्रचार कार्य को सक्रिय रूप से निभाया। इस संस्था के गठन में डॉ0 वर्मा को साधना विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। हिन्दी प्रचार में इस संस्था का विशेष योगदान रहा।

अस्तु, हिन्दी संस्थाओं के प्रचार कार्यो में मिलने वाली सफलताओं से डॉ0 रामकुमार वर्मा का काफी उत्साहवर्धन हुआ। उन्होनें प्रयाग विश्वविद्यालय में ही एक नवीन संस्था का भी गठन किया जो 'नाटय समिति' के नाम से जानी जाने लगी। डॉ0 वर्मा का यह प्रयास अब तक के प्रयासों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा। उन्होनें इस समिति के माध्यम से हिन्दी नाटकों के लिए रंगमंच की स्थापना की। नाटक विधा को स्थापित किया गया। खेलने के लिए स्थान, नाटक और पात्र भी जुटाये और इस प्रकार हिन्दी की सर्वाधिक सशक्त विधा को पुनः जीवित किया। साहित्यक नाटक लिखने की स्वस्थ परम्परा डाली। कालान्तर में तो वर्मा जी ने इस दिशा में गम्भीर कार्य करने हेतु एक नवीन संस्था को जन्म दिया। 'भारत नाटय संस्थान' के द्वारा वर्मा जी के एकांकी नाटक 'औरंगजेब की आखिरी रात' का मंचन हुआ जिसकी साहित्य जगत में भूरि–भूरि प्रशंसा हुई।

'भारत नाटय संस्थान' ने हिन्दी नाटक के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नाटकों के प्रति युवा रचनाकारों में आकर्षण पैदा हुआ वहीं दूसरी ओर दर्शकों की अभिनय कला के प्रति जिज्ञासा बढ़ी । तब तक नाटक विधा हिन्दी में प्राय उपेक्षित थी अब उसे पर्याप्त महत्व मिलने लगा। संस्थागत प्रयासों की सफलता के पश्चात डॉ0 वर्मा को यह पक्का विश्वास हो गया कि अभिनय और रंगमंच द्वारा हिन्दी को प्रभावी बनाया जा सकता है और उसको व्यापक रूप में प्रचारित भी किया जा सकता है। अतः डॉ0 रामकुमार वर्मा ने विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में 'कला संगम' नाटक संस्था का गठन कर छात्र–छात्राओं के अन्दर सुषुप्त रचनात्मक प्रतिभा को जाग्रत किया। 'कला संगम' की ओर से निरन्तर चित्रकला प्रदर्शनी, काव्य प्रतियोगिता, नाटक मंचन आदि का कार्यक्रम आयोजित होता। कला संगम का एक उद्देश्य कला के प्रति जागृति था तो दूसरी ओर नवोदित रचनाकरों, रंगधर्मियों को पैदा करना भी था, जिसमें कला संगम को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई।

हिन्दी प्रचारक एवं सेवक के रूप में डॉ0 रामकुमार वर्मा का मूल्यांकन किया जाए तो विदित हो जायेगा कि वे कितने बड़े रचनाकर्मी साहित्य साधक और सामाजिक व्यक्ति थे। अध्यापन कार्य के अतिरिक्त वे संस्थाओं के गठन रख–रखाब, प्रसार एवं प्रसार कार्य, अभिनय तथा मंचन आदि–आदि समस्त कार्यो को सम्पादित करने के बाद नित नूतन संस्थाओं के जन्म में सम्मिलित होते और अनी प्रभावी भूमिका का निर्वाह कर उत्तरदायी पद ग्रहण कर लेते थे। नागरी प्रचारिणी सभा काशा के डॉ0 वर्मा आजीवन सदस्य बने। इसके अतिरिक्त डॉ0 रामकुमार वर्मा ने सर्वाधिक हिन्दी सेवा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री और परीक्षा मंत्री पद पर रहकर कीं।

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने साहित्य सम्मेलन परीक्षा मंत्री के रूप में व्यवस्था स्थापित की परीक्षार्थियों के ज्ञान बर्धन हेतु अनेक योजनाऐं बनायीं। महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशन अप्रात्य साहित्य को प्रकाशित कर समाज के सम्मुख लाना यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करके हिन्दी की बहुआयामी सेवा प्रदान की। इसके अतिरिक्त डॉ0 रामकुमार वर्मा देश–विदेश की कई हिन्दी संस्थानों और भारतीय विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के परिसरों में मुख्य अतिथि के रूप में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार का निस्वार्थ कार्य सम्पादित करते रहे। इसके अतिरिक्त वर्मा जी की कई नाटक और एकांकी विश्वविद्यालय और देश भर के महाविद्यालयों में पढ़ायी जाती है।

वर्मा जी के साहित्यिक रूप में हिन्दी की जो सेवा प्राप्त होती रही है वह निरन्तर जारी रहेगी। इसका प्रमाण हिन्दी का समृद्ध साहित्य और उसकी परम्परा है। डॉ0 वर्मा ने प्रोफेसर के रूप में भी हिन्दी की सेवा की है। उन्होनें रूस में हिन्दी पाठन हेतु पाठ्यक्रम तैयार किया। अन्याय देशों के दौरे में भी वे हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार करते रहते। डॉ0 वर्मा ने आठ दशकों में हिन्दी जगत व हिन्दी प्रेमियों को बहुविधि, बहुविध साहित्य दिया। उनकी अनेक कृतियॉ पुरस्कृत हुई। भारत के महामहित राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त 'पदम भूषण' उनके सम्मान का सर्वाधिक सौभाग्यशाली दिन कहा जा सकता है।

अस्तु डॉ0 रामकुमार वर्मा अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान बनाने में सफल रहे हैं। उन्होनें हिन्दी सहित्य की महत्वपूर्ण सेवा की है। काव्य, नाटक, एकांकी, अलोचना, गद्यगीत, निबन्ध इतिहास आदि–आदि सभी क्षेत्रों में अपनी यशोपताका फहरायी है। उनकी काव्य कृतियों में 'चित्तौड़ की चिता', निशीय, एकलव्य, अंजलि, चित्ररेखा, चंद्र किरण,आकाश गंगा, कृतिका, ये गजरे तारों वाले, उत्तरामण, अहल्या आदि सर्वाधिक चर्चित हैं वहीं वर्मा जी एकांकी नाटकों के जन्मदाता कहे जाते हैं। एकांकी नाटकों की रचना में वर्मा जी के अनुपम प्रयोग विशिष्ट महत्व रखते हैं। एकांकी नाटय रचनाओं के साथ–साथ डॉ0 रामकुमार वर्मा ने हिन्दी रंगमंच को काफी सबल और समुन्नत बनाया है। उनकी चर्चित एकांकियों में 'पृथ्वी राज की आँखें','चारूमित्रा',शिवाजी, सप्तकिरण कौमुदी महोत्सव ,दीपदान, ऋतुराज, ध्रबुतारिका, रम्यरास, रजत रश्मि आदि–आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार 'कबीर का रहस्यवाद' हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, साहित्य शास्त्र रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकल वर्मा जी के उत्कृष्ट शोध ग्रन्थ कहे जा सकते हैं। उनके आलोचनात्मक ग्रंथों में 'कबीर–एक अनुशीलन' अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त 'साहित्य समालोचन' हिन्दी साहित्य का अनुशीलन', विचार दर्शन' आदि भी आलोचना क्षेत्र के महत्वपूर्ण ग्रन्थ कहे जा सकते हैं।

निष्कर्ष

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन भी किया है जिनमें उनका वैचारिक चिन्तन अभिव्यक्त हुआ है। हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं का कौशलपरक सम्पादन विशेष रूप से महत्वपूर्ण कहा जायेगा। उनके द्वारा सम्पादित ग्रंथों में 'कबीर पदावली', 'आधुनिक काव्य संग्रह', 'गद्य गौरव' 'काव्याजलि' तथा संक्षिप्त संत कबीर' आदि महत्वपूर्ण सम्पादन है। इस प्रकार वर्मा जी ने काव्य, नाटक, एकांकी सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चला कर हिन्दी साहित्य के भण्डार को समृद्ध बनाया है और हिन्दी की एक सच्चे साधक की भॉति साधना की है तथा हिन्दी सेवा कर साहित्य जागत में कीर्तिमान बनाया है।

संदर्भ

1. वर्मा, राम कुमार. राम कुमार वर्मा ग्रंथावली. नई दिल्ली : साहित्य अकादमी।
2. वर्मा, राम कुमार. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज : साहित्य भवन।
3. वर्मा, राम कुमार. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास एवं अन्य निबंध. प्रयागराज : साहित्य भवन।
4. शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा।
5. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्यरू उद्भव और विकास. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
6. नामवर सिंह. छायावाद. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।

7. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
8. वाजपेयी, नंददुलारे. हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी. नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन।
9. शर्मा, रामविलास. हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
10. सिंह, बच्चन. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन।

Declaration by Author (s): *"I/We hereby declare that this manuscript is my/our original work, free from plagiarism, and that all sources and any use of Artificial Intelligence tools for content generation or editing have been fully disclosed and verified for accuracy."* ***डा0 कर्मेन्द्र सिंह सेंगर***